(प्रथम छमाही प्रथम इकाई की अध्ययन सामग्री 2022 से)

भाषा और व्याकरण (LANGUAGE & GRAMMAR)

भाषा - मनुष्य की सार्थक और समझ में आनेवाली बोली को 'भाषा' कहते हैं।

भाषा दो प्रकार की होती है-

1. मौखिक भाषा- जिसे हम मुँह से बोलते और कानों से सुनते हैं।
2. लिखित भाषा- जिसे हम हाथों से लिखते और आँखों से पढ़ते हैं।

हिंदी व्याकरण- जो शास्त्र हमें शुद्ध हिंदी लिखना और बोलना सिखाता है, उसे 'हिंदी व्याकरण' कहते हैं।

वर्ण विचार (Orthography)

प्रेम रोग।	- एक वाक्य है।
प्रेम और रोग।	-दो शब्द हैं।
प् र् ए म् अ र् ओ ग् अ।	-नौ वर्ण हैं।

वर्ण : लिखित भाषा के छोटे से छोटे खंड को 'वर्ण' कहते हैं जिसके फिर टुकडे न किए जा सकें। जैसे : अ म् ज् ई ल् फ् उ आदि।

1. सामान्यतः बोलते समय जिसे हम एक वर्ण समझते हैं, वस्तुतः उसमें दो वर्ण होते हैं। एक वह वर्ण स्वयं होता है और दूसरा उसमें 'अ' मिला होता है।
2. वर्ण दो प्रकार के होते हैं। एक, 'अ' की जाति के, जो अकेले बोले जा सकते हैं। दूसरे, 'क' की जाति के, जो अकेले नहीं बोले जा सकते।

वर्ण दो प्रकार के होते हैं-

1. **स्वरवर्ण** : जो वर्ण बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता के अकेले बोले जा सकते हैं, उन्हें 'स्वरवर्ण' कहते हैं। ये संख्या में 11 हैं।
   जैसे : अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ।
2. **व्यंजनवर्ण** : जो वर्ण अकेले नहीं बोले जा सकते और जिन्हें बोलने के लिए स्वरवर्णों की सहायता अपेक्षित होती है, उन्हें 'व्यंजनवर्ण' कहते हैं। ये संख्या में 33 हैं।

जैसे :

स्पर्शव्यंजन	अंतस्थव्यंजन	ऊष्मव्यंजन
क ख ग घ ङ	य र ल व	श ष स ह
च छ ज झ ञ		
ट ठ ड ढ ण		
त थ द ध न		
प फ ब भ म		

इन्हीं 44 वर्णों के अनुसार सजे हुए रूप को 'वर्णमाला' कहते हैं।

स्वरों का उच्चारण और लेखन (Vowels : Pronunciation & Methods of writing)

इकहरा	दुहरा	तिहरा
कु कु !	डूं !!	कूं ऊं ऊं !!!

स्वर तीन प्रकार के बोले जाते हैं -

इकहरा स्वर	दुहरे स्वर	तिहरे स्वर
अ	आ	आ3 !
इ	ई	ई3 !
उ	ऊ	ऊ3 !
ऋ	ए	ए3 !
	ऐ	ऐ3 !
	ओ	ओ3 !
	औ	औ3 !

मात्रा : एक स्वर के बोलने में जितना समय लगता है, उसे 'मात्रा' कहते हैं।

1. हृस्वस्वर : जिन स्वरों के बोलने में एक मात्रा समय लगता है, उन्हें 'एकमात्रिक या हृस्वस्वर' कहते हैं। जैसे : अ इ उ ऋ
2. दीर्घस्वर – जिन स्वरों के बोलने में दो मात्रा समय लगता है, उन्हें 'द्विमात्रिक या दीर्घस्वर' कहते हैं। जैसे : आ ई ऊ
3. प्लुतस्वर – जिन स्वरों के बोलने में तीन मात्रा समय लगता है, उन्हें 'त्रिमात्रिक या प्लुतस्वर' कहते हैं। जैसे : ए3 ऐ3 ओ3 औ3

जैसे कि नीला, पीला और लाल इन मूल रंगों को परस्पर बार–बार मिलाने से अनेक रंग बन जाते हैं। इसी प्रकार–

1. **दीर्घस्वर** : एक जाति के एक–एक स्वर को दुहरा करके बोलने से जिन स्वरों का निर्माण होता है, उन्हें 'दीर्घस्वर' कहते हैं।

   जैसे : अ + अ = आ, इ + इ = ई, उ + उ = ऊ।

2. **संयुक्तस्वर** : विजाति के मूलस्वरों, दुहरे स्वरों और अन्य स्वरों को संयुक्त करने से जो स्वर बनते हैं, उन्हें 'संयुक्तस्वर' कहते हैं।

   जैसे :अ + इ = ए, आ + ए = ऐ, अ + उ = ओ, आ + ओ = औ।

मूलस्वर	दीर्घस्वर	प्लुतस्वर
अ	आ	ए
इ	ई	ऐ
उ	ऊ	ओ
ऋ		औ

ये ११ हैं। इनके लक्षण इस प्रकार हैं :

मूलस्वर : वे जो किसीसे मिले बिना बनते हैं।

दीर्घस्वर : वे जो सजातीय मूलस्वरों को दुहरा करने से बनते हैं।

संयुक्तस्वर : वे जो भिन्नजातीय स्वरों को संयुक्त करने से बनते हैं।

स्वरों को लिखने की रीति

हिंदी वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण हैं : स्वर और व्यंजन।

इसलिए स्वर लिखते समय दो क्रमों से लिखा जाता है :

1. स्वर स्वरों के साथ।
2. स्वर व्यंजनों के साथ।

1. जब स्वर स्वरों के साथ आते हैं तो वे उसी रूप में लिखे जाते हैं, जिस रूप में कि वर्णमाला में दिखाए गए हैं। जैसे : आई, आए, आइए।

2. अ) जब स्वर व्यंजनों के आदि में आते हैं तो तब भी वास्तविक रूप में लिखे जाते हैं।
जैसे : अमर, आदर, आऊँगा, एक।

आ) स्वर व्यंजनों के बाद आते हैं तो उनका वह रूप नहीं रहता, तब उनके प्रतिनिधि–विशेष चिह्न लिखे जाते हैं। 'अ' का कोई विशेष चिह्न नहीं होता।

आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ
का	कि	की	कु	कू	कृ	के	कै	को	कौ

अनुनासिक स्वर पर ' ं ' और या ' ँ ' चिह्न लगा दिए जाते हैं, जिन्हें क्रमशः 'अनुस्वार' और 'चंद्रबिंदु' कहते हैं।

व्यंजनों का उच्चारण और लेखन (Consonants : Pronunciation & Methods of writing)

'तरह' शब्द का उच्चारण देखने से मालूम होता है कि -

त – के उच्चारण में जिह्वा दाँतों का स्पर्श करती है।

ह – के उच्चारण में साँस सीधे बाहर चली जाती है।

र – के उच्चारण में जिह्वा इन दोनों के बीच की स्थिति में रहती हैं।

इस प्रकार व्यंजनों का उच्चारण हम तीन प्रकार से करते हैं :

1. **स्पर्शव्यंजन** : जिन व्यंजनों को बोलते समय जिह्वा मुँह के किसी न किसी भाग का स्पर्श करती है, उन्हें 'स्पर्शव्यंजन' कहते हैं । ये 'क' से लेकर 'म' तक 25 स्पर्शव्यंजन।

2. **ऊष्मव्यंजन** : जिन वर्णों को बोलते समय साँस मुँह से निकलकर सीधे बाहर चली जाती है, उन वर्णों को 'ऊष्मव्यंजन' कहते हैं।
ये 4 हैं : श, ष, स, ह।

3. अंतस्थ व्यंजन : स्पर्श व्यंजन और ऊष्म व्यंजन इन दोनों के बीज में रहनेवाले व्यंजनों को 'अंतस्थ व्यंजन' कहते हैं। ये 4 हैं : य, र, ल, व।

स्पर्शव्यंजन	अंतस्थव्यंजन	ऊष्मव्यंजन
क ख ग घ ङ =('क' वर्ग)	य र ल व	श ष स ह
च छ ज झ ञ =('च' वर्ग)		
ट ठ ड ढ ण =('ट' वर्ग)		
त थ द ध न =('त' वर्ग)		
प फ ब भ म =('प' वर्ग)		

प्रत्येक वर्ण को पहचान के लिए 'कार' लगाया जाता है।

जैसे ककार, मकार। लेकिन 'र' के लिए 'रेफ' कहते हैं।

व्यंजनों को लिखने की रीति

हिन्दी वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण हैं : स्वर और व्यंजन।

इसलिए व्यंजन लिखते समय दो क्रमों से लिखा जाता है–

१. व्यंजन स्वरों के साथ।

२. व्यंजन व्यंजनों के साथ।

व्यंजनों के पहले या अंत में स्वरों को जोडे बिना व्यंजनों का उच्चारण नहीं हो सकता। इसलिए व्यंजन सर्वथा 'पराश्रित' हैं।

संयुक्त व्यंजन : व्यंजनों को व्यंजनों के साथ लिखते समय हलंत या स्वर रहित व्यंजन का कुछ भाग कट जाता है। ऐसे व्यंजनों को 'संयुक्तव्यंजन' कहते हैं । संयुक्त व्यंजन तीन प्रकार से लिखे जाते हैं–

१. आगे–पीछे लिखे जानेवाले संयुक्त व्यंजन : व्यंजनों में ख, ग, घ, च, त, थ, न, य, स– ये खडी पाईवाले व्यंजन है; अर्थात इनके अंत में 'ा' जैसी एक खडी रेखा रहती है, इसे 'पाई' कहते हैं । जब ये व्यंजन किसी आगे के व्यंजन से जुडते हैं तो पाई गिर जाती है ।

जैसे : ख्, ग्, घ्, च्, त्, थ्, न्, य्, स् । ख्याल, प्यार ।

२. **ऊपर–नीचे लिखे जानेवाले संयुक्त व्यंजन** :

जब क, ट, ड, द, र, ह संयोग के आदि में हों तो ये आगेवाले व्यंजन के ऊपर आसीन होते हैं ।

जैसे : क्क, ड्ड, द्व, र्क, ह्व ।

क ज त न ऊपर–नीचे और आगे–पीछे दोनों प्रकार से लिखे जाते हैं : क्क क्क, त्त त्त, न्न न्न ।

कर्म = क्+अ+र्+म्+अ

क्रम = क्+र्+अ+म्+अ

३. कुछ व्यंजन ऐसे हैं, जिनमें संयुक्त व्यंजन का रूप बिलकुल ही बदल जाता है । ये केवल तीन हैं - क्ष, त्र, ज्ञ ।

वर्तनी (Spelling)

अर्थ - अनुसरण करना, अर्थात पीछे-पीछे चलना।

परिभाषा: उच्चरित भाषा का अनुकरण कर जो लिखा जाता है, उसे 'वर्तनी' कहते हैं।

वर्तनी का महत्व

1. वर्तनी की सहायता से युग-युगों से संचित ज्ञान हमें आज भी लिखित रूप में प्राप्त होता है।
2. वर्तनी के द्वारा लिपिबद्ध साहित्य और ज्ञान-विज्ञान देश की सीमाओं को भी लांघता है और सभी को सुलभ हो जाता है।
3. वर्तनी के माध्यम से दूरस्थ लोगों में पत्र और संदेश का आदान-प्रदान होता है।

वर्तनी की एकरूपता

वर्तनी की एकरूपता से भाषा का मानक रूप स्थायी बनता है तथा इसमें भ्रांतियों के अवसर नहीं रहते हैं।

वर्तनी की सहायता से भाषा लिखित रूप प्राप्त करती है। यदि वर्तनी अशुद्ध हो तो स्वाभाविक है कि भाषा भी अशुद्ध होगी तथा इससे भाषा की मानकता प्रभावित होगी। वर्तनी में अशुद्धि के विशेष कारण होते हैं।

जैसे- 1) लिपि के संबंध में अपूर्ण ज्ञान।

2) व्याकरण का ज्ञान न होना।

3) शुद्ध उच्चारण न करना आदि।

हिंदी वर्तनी के कुछ आवश्यक नियम

(1.) कारक तथा उनके चिह्न (विभक्ति चिह्न)

1. संज्ञा शब्द के साथ विभक्ति चिह्न को लिखते समय अलग से लिखाना चाहिए। जैसे- मोहन ने - कर्ता कारक, सोहन को - कर्म कारक आदि।
2. सर्वनाम के साथ विभक्तियाँ जोड़ कर लिखी जाती हैं। जैसे- उसने, मुझसे, उसको आदि।

(2.) निपात-शब्द या अव्यय

1. यदि सर्वनाम और विभक्ति के बीच निपात जैसे- ही, को आदि आ जाएँ, तो उन्हें अलग से लिखा जाता है। जैसे- (क) मैं आप ही के लिए लाया हूँ।
   (ख) उस ही से मुझे यह समाचार मिला।
2. कुछ अव्यय शब्द पृथक लिखे जाते हैं, जैसे- 'तक' और 'साथ' (मेरे साथ, वहाँ तक)।
3. आदरसूचक अव्यय 'श्री' और 'जी' भी अलग लिखे जाते हैं।
   उदाहरणार्थ- श्री राम, रोशनलाल जी।
4. जिन अव्ययों के साथ विभक्ति चिह्न आते हैं, वे चिह्न भी अलग लिखे जाते हैं। जैसे- यहां से, सदा से, तब से।

(3.) संयुक्त और सहायक क्रिया को एक साथ नहीं, अपितु पृथक लिखना चाहिए।

जैसे- (क) मोहन जा सकता था। (ख) वे आ सकते थे।

पूर्वकालिक क्रियाएँ एक शब्द के रूप में हो तो मिलाकर लिखते हैं।

यथा- खा पीकर, रो रोकर, सोकर।

कभी-कभी इनके बीच में योजक का प्रयोग अधिक स्पष्टता के लिए किया जाता है।

जैसे- पढ़-लिखकर, रो-रोकर, खा-पीकर

(4.) योजक चिह्न का प्रयोग - से, सा, जैसा आदि शब्द यदि उपमा या गुणों की समानता प्रकट करने के लिए आते हैं, तो उनमें योजक चिह्न का प्रयोग करना चाहिए।

जैसे- (क) हरिश्चंद्र-सा सत्यवादी।

(ख) लक्ष्मीबाई-जैसी स्त्री।

(ग) द्वंद्व समास में योजक चिह्न का प्रयोग करना चाहिए। जैसे- माता-पिता, रात-दिन, भाई-बहन आदि।

प्रायः तत्पुरुष समासों में योजक चिह्न (हाइफन) की आवश्यकता नहीं होती है।
जैसे- नगरवासी, बलिवेदी, गंगाजल आदि। यदि भ्रम उत्पन्न होने की संभावना हो, तो योजक चिह्न लगाते हैं। जैसे- भू-तत्व।

(5.) द्‌वित्व अक्षरों की अशुद्‌धियाँ-
सभी वर्णों के दूसरे और चौथे अक्षर द्‌वित्व रूप में नहीं लिखे जाते हैं।

जैसे-	अशुद्‌ध	शुद्‌ध
	अछ्छा	अच्छा
	बुध्धि	बुद्‌धि
	मुठ्ठी	मुट्ठी

(6.) मात्रा और अक्षर संबंधी अशुद्‌धियाँ -

जैसे-	अशुद्‌ध	शुद्‌ध
	ईर्षा	ईर्ष्या
	अध्यन	अध्ययन
	विपति	विपत्ति
	सन्मुख	सम्मुख
	कनिष्ट	कनिष्ठ
	जेष्ट	ज्येष्ठ
	उपलक्ष	उपलक्ष्य
	पृष्ट	पृष्ठ
	जनम	जन्म
	भैय्या	भैया
	मूड़	मूढ़
	शारिरिक	शारीरिक
	श्राप	शाप

(7.) संधि संबंधी अशुद्‌धियाँ -

जैसे-	अशुद्‌ध	शुद्‌ध
	अत्योक्ति	अत्युक्ति
	तदानुसार	तदनुसार
	अधोपतन	अधःपतन
	तदोपरांत	तदुपरांत
	विसाद	विषाद

उपरोक्त	उपर्युक्त
दुरावस्था	दुरवस्था
अत्याधिक	अत्यधिक
उच्छास	उच्छवास
निरोग	नीरोग
निर्पेक्ष	निरपेक्ष

<u>**संधि**</u> (Joining Letters)

संधि : अक्षरों के मेल को संधि कहते हैं। संधि के मुख्य तीन प्रकार है :

क) **स्वरसंधि**– दो स्वरों के मिलाने से जो विकार होता है, उसे 'स्वरसंधि' कहते हैं।

उदा : अ + अ = आ राम + अवतार = रामावतार।

इ + ई = ई परि + ईक्षा = परीक्षा

ख) **व्यंजन संधि**– व्यंजन को व्यंजन या स्वर से मिलाने से जो विकार होता है, उसे 'व्यंजन संधि' कहते हैं।

उदा : त् + न् = न्न जगत् + नाथ = जगन्नाथ।

इ + स् = ष वि + सम = विषम

ग) **विसर्गसंधि**– विसर्ग के मिलाने से जो विकार होता है, उसे 'विसर्गसंधि' कहते हैं।

उदा : म: + अ = ओ प्रथम: + अध्याय: = प्रथमोध्याय:

तः + ए = ए अतः + एव = अतएव।

म अ नदाफ

(प्रथम छमाही द्‌वितीय इकाई की अध्ययन सामग्री 2022 से)

शब्द विचार

हिंदी व्याकरण के तीन खंड होते हैं, वर्ण, शब्द और वाक्य विचार। शब्द विचार हिंदी व्याकरण का दूसरा खंड है, जिसके अंतर्गत ध्वनियों के मेल से बने सार्थक वर्ण समूह जैसे - शब्द की परिभाषा, भेद-उपभेद, संधि, विच्छेद, रूपांतरण, निर्माण आदि से संबंधित नियमों पर विचार किया जाता है।

शब्द की परिभाषा : "एक से अधिक ध्वनियों (वर्णों) के मेल से बने सार्थक ध्वनि-समूह (वर्ण-समुदाय) को शब्द कहते हैं।" दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि वर्णों या अक्षरों से बना ऐसा स्वतंत्र समूह जिसका कोई अर्थ हो, वह समूह शब्द कहलाता है।

जैसे: लड़का, लड़की, फूल आदि।

शब्द विचार का वर्गीकरण :

1. व्युत्पत्ति के आधार पर (Etymology) - रूढ़ शब्द, यौगिक शब्द, योगारूढ़ शब्द।
2. उत्पत्ति (विकास) के आधार पर - तत्सम शब्द, तद्‌भव शब्द, देशज शब्द, विदेशी शब्द, संकर शब्द।
3. अर्थ के आधार पर - सार्थक शब्द, निरर्थक शब्द।
4. विकार के आधार पर - विकारी और अविकारी।

1. **व्युत्पत्ति के आधार पर** (Etymology) : रूढ़ शब्द, यौगिक शब्द और योगरूढ़ शब्द।

1. रूढ़ शब्द : ऐसे शब्द जो किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं, लेकिन उनके टुकड़े कर दिए जाएँ तो निरर्थक हो जाते हैं। ऐसे शब्दों को रूढ़ शब्द कहते हैं।

जैसे: जल, कल, फल आदि। जल, कल, फल एक निश्चित अर्थ प्रकट करते हैं। लेकिन अगर ज और ल को, क और ल को, फ और ल को अलग कर दिया जाए तो इनका कोई अर्थ नहीं रह जायेगा।

2. यौगिक शब्द : दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बनने वाले शब्दों को यौगिक शब्द कहते हैं। किन्तु वे दोनों ही शब्द ऐसे होने चाहिए जो सार्थक हों, यानी दोनों शब्दों का अपना-अपना अर्थ भी होना चाहिए। यौगिक शब्दों की यह एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि इसके खंड (टुकड़े) करने पर भी उन खंडों के अर्थ निकलते हैं।

उदाहरण : शीशमहल = शीश + महल
स्वदेश = स्व + देश
देवालय = देव + आलय
कुपुत्र = कु + पुत्र आदि।

इन सभी शब्दों में दो-दो शब्दों के योग हैं। शीशमहल में शीश और महल का, स्वदेश में स्व और देश का, देवालय में देव और आलय का और कुपुत्र में कु और पुत्र का। इन उदाहरणों

में हम देख सकते हैं कि शब्दों को अलग-अलग करने पर भी प्रत्येक खंड अपना अलग अर्थ रखता है।

जैसे - शीशमहल में शीश का अर्थ हुआ सर और महल का अर्थ हुआ आलीशान मकान, स्वदेश में स्व का अर्थ है अपना और देश कहा जाता है किसी राष्ट्र को, देवालय में देव का अर्थ है भगवान और आलय कहा जाता है रहने के स्थान को और कुपुत्र में कु का एक अर्थ है बुरा और पुत्र कहा जाता है संतान को।

3. योगरूढ़ शब्द : ऐसे शब्द जो किन्हीं दो शब्द के योग से बने हों एवं बनने पर किसी विशेष अर्थ का बोध कराते हैं, वे शब्द योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो एक या एक से अधिक शब्दों के मेल से बनते हैं किन्तु वे अपने सामान्य अर्थ का बोध नहीं कराते बल्कि अपने अर्थ के विपरीत किसी विशेष अर्थ का बोध कराते हैं। इस प्रकार के शब्द योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। ऐसे शब्दों को बहुव्रीहि समास भी कहा जाता है।

उदाहरण : नीलकंठ = नीले कंठ वाला अर्थात भगवान शिव।
पंकज = कीचड़ में उत्पन्न होने वाला अर्थात कमल।
दशानन = दस मुख वाला अर्थात रावण।

इन उदाहरणों में हम देख सकते हैं कि नीलकंठ शब्द का अपना अर्थ है नीले कंठ वाला अर्थात् नीले गले वाला किन्तु ये शब्द अपने अर्थ को न बताते हुए एक विशेष अर्थ को बताता है अर्थात नीलकंठ भगवान शिव के लिए प्रयोग किया जाता है। इसी तरह पंकज शब्द का अपना सामान्य अर्थ होता है कीचड़ में उत्पन्न होने वाला और इसका प्रयोग होता है कमल के लिए। इसी प्रकार दशानन का सामान्य अर्थ होता है दस मुख वाला परन्तु इसका विशेष अर्थ लिया जाता है रावण के लिए।

2. **उत्पत्ति (विकास) के आधार पर** : तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, देशज शब्द, विदेशी शब्द, संकर शब्द।

1. तत्सम शब्द : तत् (उसके) + सम (समान) अर्थात उसके समान। इसका अर्थ हुआ ऐसे शब्द जिनकी उत्पत्ति (जन्म) तो संस्कृत भाषा में हुई और बाद वे शब्द हिंदी भाषा में बिना किसी परिवर्तन के प्रयोग में आने लगे, ऐसे शब्द तत्सम शब्द कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि संस्कृत भाषा के ऐसे शब्द जिनका प्रयोग हिंदी भाषा में ज्यों का त्यों किया जाता है उन शब्दों को तत्सम शब्द कहा जाता है।

उदाहरण के लिए पुष्प, पुस्तक, पृथ्वी, मृत्यु, कवि, माता, विद्या, नदी, फल, आदि।

2. तद्भव शब्द : ऐसे शब्द जिनकी उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई थी लेकिन वह रूप बदलकर हिंदी में आ गए हों, ऐसे शब्द तद्भव शब्द कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि संस्कृत भाषा के कुछ ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग हिंदी भाषा में भी होता है किन्तु फर्क इतना है कि उन शब्दों का अर्थ तो समान ही रहता है परन्तु हिंदी भाषा में उन शब्दों के परिवर्तित रूपों का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण : दुग्ध —> दूध, अग्नि —> आग, कार्य –> काम,
कर्पूर –> कपूर, हस्त —> हाथ

इन उदाहरणों में दुग्ध, अग्नि, कार्य, कर्पूर, हस्त संस्कृत भाषा के शब्द है और इन्हीं शब्दों के बदले हुए रूप दूध, आग, काम, कपूर, हाथ हिंदी भाषा में प्रयोग किए जाते हैं। अतः दूध, आग, काम, कपूर, हाथ आदि जैसे शब्द तद्भव शब्द के उदाहरण हैं।

3. देशज शब्द : ऐसे शब्द जो भारत की विभिन्न स्थानीय बोलियों में से हिंदी में आ गए हैं, वे शब्द देशज शब्द कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि जो शब्द देश के अलग-अलग हिस्सों से हिंदी में आए हैं, उन शब्दों को देशज शब्द कहा जाता है। ये शब्द स्थानीय बोलियों से उत्पन्न होते हैं और उसके बाद परिस्थिति व आवश्यकतानुसार हिंदी में जुड़ जाते हैं। तथा हिंदी का ही भाग बन जाते हैं।

उदाहरण : पेट, डिबिया, लोटा, पग़डी, इडली, दोसा, समोसा, गुलाबजामुन, लड्डू, खटखटाना, झाड़ू, खिड़की आदि।

ऊपर दिए गए सभी उदाहरण भारत की ही विभिन्न क्षेत्रों की स्थानीय बोलियों में से क्षेत्रीय प्रभाव के कारण परिस्थिति व आवश्यकतानुसार हिंदी में आए है तथा हिंदी के बनकर ही प्रचलित हो गए हैं। अतः इन शब्दों की तरह ही बहुत से शब्द देशज शब्द कहलाते हैं, जो शब्द देश के अलग-अलग हिस्सों से हिंदी में आए हैं।

4. विदेशी शब्द : ऐसे शब्द जो भारत से बाहर के देशों की भाषाओं से हैं, लेकिन ज्यों के त्यों (बिना किसी बदलाव के) हिंदी में प्रयुक्त हो गए, वे शब्द विदेशी शब्द कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि ऐसे शब्द जो भारत के बाहर के देशों की भाषाओं के हैं, परन्तु उन शब्दों को हिंदी में भी प्रयोग किया जाता है तो उन शब्दों को विदेशी शब्द कहा जाता है। मुख्यतः ये विदेशी शब्द हिंदी भाषा में हमारे विदेशी जातियों से बढ़ते मिलन के कारण आए है। ये विदेशी शब्द उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, पूर्तगाली, तुर्की, फ़्रांसीसी, ग्रीक आदि भाषाओं से हिंदी में आए हैं।

विदेशी शब्दों के कुछ उदाहरण निम्न हैं :

अंग्रेजी : कॉलेज, टिकेट, टेलीविज़न, डॉक्टर, रेडियो, लेटरबॉक्स, पेन्सिल, पैन, मशीन, साइकिल, सिगरेट आदि।

फारसी : अनार, आदमी, चश्मा, चुगुलखोर जमींदार, दुकान, दरबार, नमक, नमूना, बर्फ, बीमार, रूमाल, आदि।

अरबी : अमीर, औरत, औलाद, कत्ल, कलम, कानून, कैदी, खत, फकीर, मालिक, गरीब, रिश्वत आदि।

तुर्की : कैंची, चाकू, तोप, दरोगा, बहादुर, बारूद, लाश आदि।

पूर्तगाली : अचार, कमीज, कारतूस, कॉपी, गमला, चाबी, तंबाकू, तिजोरी, तौलिया, फीता, साबुन आदि।

फ़्रांसीसी : इंजीनियर, कर्फ्यू, कार्टून, पुलिस, बिगुल आदि।

चीनी : चाय, तूफान, पटाखा, लीची आदि।
यूनानी : एटम, टेलीग्राफ, टेलीफोन, डेल्टा आदि।
जापानी : रिक्शा आदि।
5. संकर शब्द : देशी और विदेशी शब्द के योग से बने शब्द को संकर शब्द कहा जाता है।
उदाहरण : रेल + गाड़ी = रेलगाड़ी।

3. **अर्थ के आधार पर शब्द के भेद** :
अर्थ के आधार पर शब्द के दो भेद होते हैं : सार्थक शब्द और निरर्थक शब्द।
1. सार्थक शब्द : वे शब्द जिनसे कोई अर्थ निकलता हो, सार्थक शब्द कहलाते हैं।
जैसे : आदमी, गुलाब, घर, पुस्तक, विषय आदि।
2. निरर्थक शब्द : वे शब्द जिनका कोई अर्थ ना निकल रहा हो या जो शब्द अर्थहीन हो, निरर्थक शब्द कहलाते हैं।
जैसे : ठण्-ठण्, टर्-टर्, सर्-सर्, देना-वेना, मुक्का-वुक्का, रोटी-वोटी, खाना-वाना आदि।

4. **प्रयोग के आधार पर शब्द के भेद** :
प्रयोग के आधार पर शब्द के दो भेद होते हैं : विकारी शब्द और अविकारी शब्द।
1. विकारी शब्द : शब्दों को जब वाक्यों में प्रयोग किया जाता है तो उन वाक्यों में जब लिंग, वचन और कारक आदि के अनुसार परिवर्तन हो जाता है, तो ऐसे शब्दों को विकारी शब्द कहा जाता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि ऐसे शब्द जिनके रूप में लिंग, वचन, कारक के अनुसार परिवर्तन होते हैं, वे शब्द विकारी शब्द कहलाते हैं।
उदाहरण : लिंग = लड़का पढ़ता है। –> लड़की पढ़ती है।
वचन = लड़का पढ़ता है। —> लड़के पढ़ते हैं।
कारक = लड़का पढ़ता है। –> लड़के को पढ़ने दो।
ऊपर दिए गए उदाहरण में लड़का शब्द लिंग, वचन एवं कारक के अनुसार परिवर्तित हो रहा है। अतः यह विकारी शब्दों के अंतर्गत आएगा।
विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं : संज्ञा (noun), सर्वनाम (pronoun), विशेषण (adjective) और क्रिया (verb)
2. अविकारी शब्द : जिन शब्दों पर लिंग, वचन एवं कारक आदि के बदलने पर भी कोई फर्क नहीं पड़ता अर्थात जो शब्द अपरिवर्तित रहते हैं, जिन पर किसी भी परिस्थिति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ऐसे शब्द अविकारी शब्द कहलाते हैं।
उदाहरण : तथा, किन्तु, परन्तु, अधिक, धीरे, तेज़, आदि।
क्रिया विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादि बोधक अव्यय शब्द अविकारी शब्दों के अंतर्गत आते हैं।

जैसा कि हम जानते हैं तथा, किन्तु, परन्तु, अधिक, धीरे, तेज़, जैसे शब्द लिंग, वचन, कारक आदि के बदलने पर भी अपरिवर्तित रहेंगे। अतः ये उदाहरण अविकारी शब्दों के अंतर्गत आते हैं।

5. **अशुद्धि संशोधन** :

अनुनासिक (ँ) शब्दों की अशुद्धियों के उदाहरण :

अशुद्ध रूप	**शुद्ध रूप**	**अशुद्ध रूप**	**शुद्ध रूप**
हंसना	हँसना	चांद	चाँद
दांत	दाँत	बांस	बाँस
अंगना	अँगना	कंगना	कँगना
उंचा	ऊँचा	जाऊंगा	जाऊँगा
आंख	आँख	सूंड	सूँड
बांसुरी	बाँसुरी	महंगा	महँगा
मुंह	मुँह	पांचवा	पाँचवाँ
जहां	जहाँ	कांच	काँच
पहुंचा	पहुँचा	गांधीजी	गाँधीजी
छटांक	छटाँक		

इ, ई की मात्रा (ि, ी) की अशुद्धियों के उदाहरण :

अशुद्ध रूप	**शुद्ध रूप**	**अशुद्ध रूप**	**शुद्ध रूप**
उन्नती	उन्नति	नारि	नारी
निरोग	नीरोग	छि: छि:	छी छी
पुष्टी	पुष्टि	पत्नि	पत्नी
परिक्षा	परीक्षा	परस्थिति	परिस्थिति
अद्वितिय	अद्वितीय	प्राप्ती	प्राप्ति
मट्टी	मिट्टी	कवियत्री	कवयित्री
उपरीलिखित	उपरिलिखित	गयी	गई
निरस	नीरस	सृष्टी	सृष्टि
मंत्रीमंडल	मंत्रिमंडल	समीति	समिति
सूचिपत्र	सूचीपत्र	शिघ्र	शीघ्र
शक्ती	शक्ति		

उ, ऊ की मात्रा (ु, ू) की अशुद्धियों के उदाहरण :

अशुद्ध रूप	**शुद्ध रूप**	**अशुद्ध रूप**	**शुद्ध रूप**
अनुकुल	अनुकूल	पूण्य	पुण्य
उँचाई	ऊँचाई	उपर	ऊपर
पुज्य	पूज्य	प्रतिकुल	प्रतिकूल
बुढा	बूढ़ा	सुर्य	सूर्य
सिंदुर	सिंदूर	हिंदु	हिंदू
हिन्दूस्तान	हिन्दुस्तान	तुफान	तूफान
उपरोक्त	उपर्युक्त	दुंगा	दूँगा
पुरुस्कार	पुरस्कार	गुंगा	गूँगा
रूपया	रुपया	रुप	रूप
उंगली	ऊँगली		

ट और ठ की अशुद्धियों के उदाहरण :

अशुद्ध रूप	**शुद्ध रूप**	**अशुद्ध रूप**	**शुद्ध रूप**
उत्कृष्ठ	उत्कृष्ट	ज्येष्ट	ज्येष्ठ
पृष्ट	पृष्ठ	घनिष्ट	घनिष्ठ
षष्ट	षष्ठ		

न और ण की अशुद्धियों के उदाहरण :

अशुद्ध रूप	**शुद्ध रूप**	**अशुद्ध रूप**	**शुद्ध रूप**
कल्यान	कल्याण	गनित	गणित
रसायण	रसायन	रामायन	रामायण
लच्छन	लक्षण	प्रनाम	प्रणाम
प्रान	प्राण	ब्राम्हन	ब्राह्मण
वीना	वीणा	वानी	वाणी

स, श और ष की अशुद्धियों के उदाहरण :

अशुद्ध रूप	**शुद्ध रूप**	**अशुद्ध रूप**	**शुद्ध रूप**
नमष्कार	नमस्कार	पुस्प	पुष्प
कलस	कलश	प्रसंशा	प्रशंसा
पुरष्कार	पुरस्कार	प्रशाद	प्रसाद
भष्म	भस्म	वास्प	वाष्प
साशन	शासन	स्मसान	श्मशान

म अ नदाफ

हलंत (्) शब्दों की अशुद्धियों के उदाहरण

अशुद्ध रूप	**शुद्ध रूप**	**अशुद्ध रूप**	**शुद्ध रूप**
बुद्धिवान	बुद्धिमान	भगमान	भगवान
धनमान	धनवान	महान	महान्
विद्वान	विद्वान्	भाग्यमान	भाग्यवान

गलत उच्चारण के कारण की जाने वाली अशुद्धियों के उदाहरण :

अशुद्ध रूप	**शुद्ध रूप**	**अशुद्ध रूप**	**शुद्ध रूप**
अस्थान	स्थान	राज्यमहल	राजमहल
नबाव	नवाब	नछत्र	नक्षत्र
लिक्खा	लिखा	प्रंतु	परंतु
गृहस्थ्य	गृहस्थ	छमा	क्षमा
स्वास्थ	स्वास्थ्य	शत्रुहन	शत्रुघ्न
बनावास	वनवास	छः	छह
सृंगार	श्रृंगार	सकुशलपूर्वक	सकुशल
अध्यन	अध्ययन	आर्शीवाद	आशीर्वाद
अप्रसंगिक	अप्रासंगिक	अनधिकार	अनाधिकार
अत्याधिक	अत्यधिक	माधुर्यता	माधुर्य
मैत्रता	मित्रता	ऐक्यता	एकता
समुद्रिक	सामुद्रिक	चिन्ह	चिह्न
सन्मान	सम्मान	व्यावहार	व्यवहार
अनेकों	अनेक	सप्ताहिक	साप्ताहिक
सम्राज्य	साम्राज्य	संसारिक	सांसारिक
पछिताना	पछताना	बिठाया	बैठाया
पहिले	पहले	राजनैतिक	राजनीतिक
स्मर्ण	स्मरण	ईर्षा	ईर्ष्या
आर्द	आर्द्र	स्त्रोत	स्रोत
पैत्रिक	पैतृक		

भाषा (अक्षर या मात्रा) सम्बन्धी अशुद्धियाँ :

अशुद्ध रूप	**शुद्ध रूप**	**अशुद्ध रूप**	**शुद्ध रूप**

नदाफ

बृटिश	ब्रिटिश		
रिषी	ऋषि	बृह्म	ब्रह्मा
अनुगृह	अनुग्रह	पैत्रिक	पैतृक
जाग्रती	जागृति	स्त्रीयाँ	स्त्रियाँ
निरिक्षण	निरीक्षण	अती	अति
तैय्यार	तैयार	आवश्यकीय	आवश्यक
अकाश	आकाश	असीस	आशिष
द्रष्टि	दृष्टि	घनिष्ट	घनिष्ठ
व्यवहारिक	व्यावहारिक	रात्री	रात्रि
प्राप्ती	प्राप्ति	सामर्थ	सामर्थ्य
एकत्रित	एकत्र	ईर्षा	ईर्ष्या
पती	पति	आक्रष्ट	आकृष्ट
सामिल	शामिल	मष्तिस्क	मस्तिष्क
सन्मान	सम्मान	गुरू	गुरु
परीचय	परिचय	चहिए	चाहिए
प्रथक	पृथक्	परिक्षा	परीक्षा
पूज्यनीय	पूजनीय	परीवार	परिवार
अज्ञानता	अज्ञान	गरीमा	गरिमा
समाधी	समाधि		
पत्नि	पत्नी	अतीशय	अतिशय
शताब्दि	शताब्दी	दुकान	दूकान
अन्तर्चेतना	अन्तश्चेतना	दंपति	दंपती

3. समास सम्बन्धी अशुद्धियाँ :

दो या दो से अधिक पदों का समास करने पर प्रत्ययों का उचित प्रयोग न करने से जो शब्द बनता है, उसमें कभी-कभी अशुद्धि रह जाती है। जैसे -

अशुद्ध रूप	**शुद्ध रूप**	**अशुद्ध रूप**	**शुद्ध रूप**
दिवारात्रि	दिवारात्र	निरपराधी	निरपराध
ऋषीजन	ऋषिजन	प्रणीमात्र	प्राणिमात्र
स्वामिभक्त	स्वामीभक्त	पिताभक्ति	पितृभक्ति

म अ नदाफ

महाराजा	महाराज	नवरात्रा	नवरात्र
दुरावस्था	दुरवस्था		

4. संधि सम्बन्धी अशुद्धियाँ :

अशुद्ध रूप	**शुद्ध रूप**	**अशुद्ध रूप**	**शुद्ध रूप**
उपरोक्त	उपर्युक्त	सदोपदेश	सदुपदेश
वयवृद्ध	वयोवृद्ध	सदेव	सदैव
अत्याधिक	अत्यधिक	सन्मुख	सम्मुख
उधृत	उद्धृत	मनहर	मनोहर
दुरावस्था	दुरवस्था	आर्शीवाद	आशीर्वाद

6. प्रत्यय-उपसर्ग सम्बन्धी अशुद्धियाँ :

अशुद्ध रूप	**शुद्ध रूप**	**अशुद्ध रूप**	**शुद्ध रूप**
सौन्दर्यता	सौन्दर्य	लाघवता	लाघव
गौरवता	गौरव	चातुर्यता	चातुर्य
ऐक्यता	ऐक्य	सामर्थ्यता	सामर्थ्य
सौजन्यता	सौजन्य	औदार्यता	औदार्य
मनुष्यत्वता	मनुष्यत्व	अभिष्ट	अभीष्ट
बेफिजूल	फिजूल	मिठासता	मिठास
अज्ञानता	अज्ञान	भूगौलिक	भौगोलिक
इतिहासिक	ऐतिहासिक	निरस	नीरस

सामान्यतः अशुद्धि किए जाने वाले प्रमुख शब्द :

अशुद्ध रूप	**शुद्ध रूप**	**अशुद्ध रूप**	**शुद्ध रूप**
अशुद्ध	शुद्ध	अतिथी	अतिथि
अतिश्योक्ति	अतिशयोक्ति	अमावश्या	अमावस्या
अनुगृह	अनुग्रह	अन्ताक्षरी	अन्त्याक्षरी
अनूज	अनुज	अन्धेरा	अँधेरा
अनेकों	अनेक	अनाधिकार	अनधिकार
अधिशाषी	अधिशासी	अन्तरगत	अन्तर्गत
अलोकित	अलौकिक	अगम	अगम्य
अहार	आहार	अजीविका	आजीविका
अहिल्या	अहल्या	अपरान्ह	अपराह्न

अत्याधिक	अत्यधिक	अभिशापित	अभिशप्त
अंतेष्टि	अंत्येष्टि	अकस्मात	अकस्मात्
अर्थात	अर्थात्	अनूपम	अनुपम
अंतर्रात्मा	अंतरात्मा	अन्विती	अन्विति
आभ्यंतर	अभ्यंतर	अँकुर	अंकुर
अन्वीष्ट	अन्विष्ट	आखर	अक्षर
आवाहन	आह्वान	आयू	आयु
आदेस	आदेश	अभ्यारण्य	अभयारण्य
अनुग्रहीत	अनुगृहीत	अहोरात्रि	अहोरात्र
अक्षौहिणी	अक्षोहिणी	आद्र	आर्द्र
आहूति	आहुति	आधीन	अधीन
आरोग	आरोग्य	आक्रषक	आकर्षक
इष्ठ	इष्ट	इर्ष्या	ईर्ष्या
इस्कूल	स्कूल	इतिहासिक	ऐतिहासिक
इकठ्ठा	इकट्ठा	इन्दू	इन्दु
ईमारत	इमारत	एच्छिक	ऐच्छिक
उतरदाई	उत्तरदायी	उतरोत्तर	उत्तरोत्तर
उध्यान	उद्यान	उपवाश	उपवास
उदहारण	उदाहरण	उलंघन	उल्लंघन
उपलक्ष	उपलक्ष्य	उज्जयनी	उज्जयिनी
उदीप्त	उद्दीप्त	ऊधम	उद्यम
ऊषा	उषा	ऊखली	ओखली
उर्मि	ऊर्मि	उरु	उरू
उहापोह	ऊहापोह	ऊंचाई	ऊँचाई
ऊख	ईख	रिधि	ऋद्धि
एकत्रित	एकत्र	एश्वर्य	ऐश्वर्य
ओषध	औषध	ओचित्य	औचित्य
औधोगिक	औद्योगिक	कनिष्ट	कनिष्ठ
कलिन्दी	कालिन्दी	करूणा	करुणा
कविन्द्र	कवीन्द्र	कवियत्री	कवयित्री
कलीदास	कालिदास	कार्रवाई	कार्यवाही
केन्द्रिय	केन्द्रीय	कैलास	कैलाश
किरन	किरण	किर्या	क्रिया
किँचित	किँचित्	कीर्ती	कीर्ति

कुआ	कुआँ	कुटम्ब	कुटुंब
कुतुहल	कौतूहल	कुरूति	कुरीति
कुसूर	कसूर	केकयी	कैकेयी
कोतुक	कौतुक	कोमुदी	कौमुदी
कोशल्या	कौशल्या	कोशल	कौशल
क्रति	कृति	क्रतार्थ	कृतार्थ
क्रतज्ञ	कृतज्ञ	कृत्घन	कृतघ्न
क्रत्रिम	कृत्रिम	खेतीहर	खेतिहर
गरिष्ट	गरिष्ठ	गणमान्य	गण्यमान्य
गुरू	गुरु	गूंगा	गूँगा
गोप्यनीय	गोपनीय	गूंज	गूँज
गौरवता	गौरव	गृहणी	गृहिणी
ग्रसित	ग्रस्त	गृहस्थि	गृहस्थी
गर्भिनी	गर्भिणी	घबड़ाना	घबराना
चन्चल	चंचल	चातुर्यता	चातुर्य
चाहरदीवारी	चारदीवारी	चेत्र	चैत्र
तदानुकूल	तदनुकूल	तत्वाधान	तत्वावधान
तनखा	तनख्वाह	तरिका	तरीका
तखत	तख्त	तिलांजली	तिलांजलि
तीर्थंकर	तीर्थंकर	त्रसित	त्रस्त
दारिद्रयता	दरिद्रता	दुख	दुःख
दृष्टा	द्रष्टा	देहिक	दैहिक
दोगुना	दुगुना	धनाड्य	धनाढ्य
झौंका	झोंका	तदन्तर	तदनन्तर
जरुरत	जरूरत	दयालू	दयालु
धुम्र	धूम्र	दुरुह	दुरूह
धोका	धोखा	नैसृगिक	नैसर्गिक
नाइका	नायिका	नर्क	नरक
संगृह	संग्रह	गोतम	गौतम
झुंपड़ी	झोपड़ी	तस्तरी	तश्तरी
छुद्र	क्षुद्र	छमा	क्षमा
तौल	तोल	जजर्र	जर्जर
श्रृंगार	शृंगार	गिध	गिद्ध
चाहिये	चाहिए		

चिन्ह	चिह्न	तिथी	तिथि
तैय्यार	तैयार	धेनू	धेनु
बन्धू	बंधु	द्वन्द	द्वंद्व
निश्कलंक	निष्कलंक	निरव	नीरव
नैपथ्य	नेपथ्य	परिस्थिती	परिस्थिति
नीतीज्ञ	नीतिज्ञ	न्यायधीश	न्यायाधीश
परसुराम	परशुराम	बढ़ाई	बड़ाई
प्रहलाद	प्रह्लाद	बुद्धवार	बुधवार
पुन्य	पुण्य	मंगलौर	मंगळूरु
पुर्नविवाह	पुनर्विवाह	भीमसैन	भीमसेन
लखनउ	लखनऊ	मुहुर्त	मुहूर्त
बुढ़ा	बूढ़ा	परमेस्वर	परमेश्वर
नेत्रत्व	नेतृत्व	भीत्ति	भित्ति
प्रथक	पृथक	मन्त्री	मंत्रि
पर्गल्भ	प्रगल्भ	मैथलीशरण	मैथिलीशरण
बरात	बारात	व्यावहार	व्यवहार
भेरव	भैरव	भगीरथी	भागीरथी
मंत्रीमंडल	मंत्रिमण्डल	मध्यस्त	मध्यस्थ
यसोदा	यशोदा	विरहणी	विरहिणी
राज्यभिषेक	राज्याभिषेक	युधिष्ठर	युधिष्ठिर
रितीकाल	रीतिकाल	यौवनावस्था	युवावस्था
रचियता	रचयिता	लघुत्तर	लघूत्तर
रोहीताश्व	रोहिताश्व	वनोषध	वनौषध
वधु	वधू	व्याभिचारी	व्यभिचारी
संक्षिप्तिकरण	संक्षिप्तीकरण	सतगुण	सद्गुण
संघठन	संगठन	संतती	संतति
समिक्षा	समीक्षा	सौहार्द्र	सौहार्द
समरथ	समर्थ	स्वस्थ्य	स्वास्थ्य
स्वास्तिक	स्वस्तिक	समबंध	संबंध
सन्यासी	संन्यासी	सरोजनी	सरोजिनी
संपति	संपत्ति	समुंदर	समुद्र
साधू	साधु	समाधी	समाधि
सुहागन	सुहागिन	सप्ताहिक	साप्ताहिक
स्त्राव	स्राव	स्त्रोत	स्रोत

सारथि	सारथी	नयी	नई
नही	नहीं	निस्वार्थ	निःस्वार्थ
निराभिमान	निरभिमान	निरूत्तर	निरुत्तर
नीहारिका	निहारिका	निशंग	निषंग
नुपुर	नूपुर	परिप्रेक्ष	परिप्रेक्ष्य
पुनरवलोकन	पुनरावलोकन	पुनरोक्ति	पुनरुक्ति
पुनरोत्थान	पुनरुत्थान	पक्षि	पक्षी
प्रगती	प्रगति	प्रज्ज्वलित	प्रज्वलित
प्रकृती	प्रकृति	प्रतीलिपि	प्रतिलिपि
प्रमाणिक	प्रामाणिक	प्रसंगिक	प्रासंगिक
प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी	प्रियदर्शनी	प्रियदर्शिनी
प्रत्योपकार	प्रत्युपकार	प्रविष्ठ	प्रविष्ट
पृष्ट	पृष्ठ	प्रगट	प्रकट
प्राणीविज्ञान	प्राणिविज्ञान	बजार	बाजार
वाल्मीकी	वाल्मीकि	बेइमान	बेईमान
ब्रहस्पति	बृहस्पति	भर्तसना	भर्त्सना
भानू	भानु	भैय्या	भैया
मनुषत्व	मनुष्यत्व	मँहगाई	महंगाई
मालुम	मालूम	मान्यनीय	माननीय
मुकंद	मुकुंद	मुनी	मुनि
मोहर	मुहर	रविन्द्र	रवीन्द्र
रागनी	रागिनी	रुठना	रूठना
व्रतांत	वृत्तांत	वापिस	वापस
वासुकी	वासुकि	विधार्थी	विद्यार्थी
विधी	विधि	वांगमय	वाङ्मय
वरीष्ठ	वरिष्ठ	विस्वास	विश्वास
विषेश	विशेष	विछिन्न	विच्छिन्न
विशिष्ठ	विशिष्ट	वैश्या	वेश्या
वेषभूषा	वेशभूषा	व्यंग	व्यंग्य
शारीरीक	शारीरिक	विसराम	विश्राम
शांती	शांति	शारांस	सारांश
शाषकीय	शासकीय	श्राप	शाप
शाबास	शाबाश	शर्बत	शरबत
शंशय	संशय	शक्तिशील	शक्तिशाली

शार्दुल	शार्दूल	शौचनीय	शोचनीय
शुरूआत	शुरुआत	श्राद	श्राद्ध
श्रृंखला	शृंखला	शुद्धी	शुद्धि
श्रीमति	श्रीमती	सरीता	सरिता
सन्सार	संसार	संश्लिष्ठ	संश्लिष्ट
हरितिमा	हरीतिमा	हृदय	हृदय
हितेषी	हितैषी	हेतू	हेतु।

शब्द विचार प्रश्न अभ्यास

प्रश्न 1 - शब्द को परिभाषित कीजिए।

उत्तर : निश्चित अर्थ को प्रकट करने वाले वर्ण समूह को शब्द कहते हैं। “शब्द” भाषा की स्वतंत्र इकाई होते हैं; जैसे : घोड़ा, पुस्तक, कमल आदि।

प्रश्न 2 - अर्थ के आधार पर शब्द के कितने भेद हैं? विस्तार पूर्वक बताइए।

उत्तर : अर्थ के आधार पर शब्द के दो भेद हैं - सार्थक शब्द, निरर्थक शब्द

सार्थक शब्द : जिन शब्दों का कोई अर्थ निकलता है तो उसे सार्थक शब्द कहते हैं; जैसे - घर, कमल, नेहा, आयुष।

निरर्थक शब्द : जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं निकलता है, उसे निरर्थक शब्द कहते हैं। जैसे : ठण्-ठण्, टर्-टर्, सर्-सर्, देना-वेना, मुक्का-वुक्का, रोटी-वोटी, खाना-वाना आदि।

प्रश्न 3 : उत्पत्ति के आधार पर शब्द-भेद लिखिए।

उत्तर : उत्पत्ति के आधार पर शब्दों को चार भागों में बाँट सकते हैं :

(i) तत्सम शब्द : संस्कृत के वे शब्द जो हिंदी में बिना किसी परिवर्तन के प्रयोग में लाए जाते हैं, वे तत्सम शब्द कहलाते हैं। जैसे - संस्कृत में, कर्पूर, फलम्, ज्येष्ठः, हिन्दी में, कर्पूर, फल, ज्येष्ठ

(ii) तद्भव शब्द : ये शब्द संस्कृत शब्दों के रूप में कुछ बदलाव के साथ हिंदी भाषा में प्रयोग होते हैं। जैसे - दही (दधि), साँप (सर्प) गाँव (ग्राम) सच (सत्य) काम (कार्य) पहला (प्रथम) आदि।

(iii) देशज शब्द : जो शब्द क्षेत्रीय प्रभाव के कारण हिंदी में ही आवश्यकतानुसार पैदा हो गए हैं, वे देशज कहलाते हैं। जैसे - पैसा, झटपट, जूता, डिबिया, पेट, लोहा, थैला, पगड़ी, झाड़, गड़बड़ आदि।

(iv) विदेशी शब्द : दूसरे देशों की भाषाओं से हिंदी में आए शब्द 'विदेशी' शब्द कहलाते हैं। जैसे-रेडियो, लालटेन, स्टेशन, स्कूल, पादरी, जमीन, बंदूक, सब्जी, इनाम, खेत, कलम, आदमी, वकील, सौगात, रूमाल, तौलिया, कमरा आदि।

(v) संकर शब्द : देशी और विदेशी शब्द के योग से बने शब्द को संकर शब्द कहा जाता है। उदाहरण : रेल + गाड़ी = रेलगाड़ी।

प्रश्न 4 - रूढ़ शब्द को परिभाषित कीजिए।

उत्तर : वे शब्द जो परंपरा से किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु या प्राणी आदि के लिए प्रयोग होते चले आ रहे हैं, उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं। इन शब्दों के खंड करने पर इनका कोई अर्थ नहीं निकलता यानी खंड करने पर ये शब्द अर्थहीन हो जाते हैं। जैसे चावल शब्द का यदि हम खंड करेंगे तो चा+वल या चाव+ल तो ये निरर्थक खंड होंगे। अतः चावल शब्द रूढ़ शब्द है। अन्य उदाहरण -आदमी, मिठाई, दीवार, दिन, घर, मुँह, घोड़ा आदि।

प्रश्न 5 - योगरूढ़ शब्द किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने हों और उनके विशेष अर्थ निकलें वे योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं; जैसे -

नीलकंठ = नीला + कंठ = नीलकंठ (नीले कंठवाला अर्थात शिव) अतः ये योगरूढ़ शब्द हैं।

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

प्रश्न 1 - शब्द किसे कहते हैं ?

(क) वर्णों के समूह को

(ख) वर्णों के सार्थक मेल को

(ग) वाक्य में प्रयोग किए गए शब्दों को

(घ) वर्णों के जोड़ को

उत्तर : (ख) वर्णों के सार्थक मेल को

प्रश्न 2 - विकार के आधार पर शब्दों के भेद कितने कहे गए हैं?

(क) दो

(ख) तीन

(ग) चार

(घ) पाँच

उत्तर : (क) दो

नदाफ

प्रश्न 3 - कौन सा शब्द तद्भव नहीं है ?

(क) दही

(ख) साँप

(ग) गाँव

(घ) रेडियो

उत्तर : (घ) रेडियो

प्रश्न 4 - उत्पत्ति के आधार पर शब्द होते हैं ?

(क) पाँच

(ख) दो

(ग) तीन

(घ) चार

उत्तर : (क) पाँच

प्रश्न 5 - तद्भव शब्द कौन से होते हैं ?

(क) जो शब्द संस्कृत भाषा से कुछ बदलकर हिंदी में प्रयोग होते हैं

(ख) जो शब्द हिंदी भाषा से कुछ बदलकर संस्कृत में प्रयोग होते हैं

(ग) जो विदेशी भाषाओं से हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं

(घ) जो दो भाषाओं से मिलकर बनते हैं

उत्तर : (क) जो शब्द संस्कृत भाषा से कुछ बदलकर हिंदी में प्रयोग होते हैं

प्रश्न 6 - जो शब्द क्षेत्रीय प्रभाव के कारण हिंदी में ही आवश्यकतानुसार प्रयोग किए जाते हैं, वे — कहलाते हैं।

(क) तत्सम

(ख) देशज

(ग) तद्भव

(घ) आगत

उत्तर : (ख) देशज

प्रश्न 7 - दूसरे देशों की भाषाओं से हिंदी में आए शब्द —— शब्द कहलाते हैं।

(क) तत्सम

(ख) देशज

(ग) तद्भव

(घ) आगत / विदेशी

उत्तर : (घ) आगत / विदेशी

प्रश्न 8 - अर्थ के आधार पर शब्द कितने प्रकार के होते हैं?

(क) तीन

(ख) दो

(ग) चार

(घ) पाँच

उत्तर : (ख) दो

प्रश्न 9 - यौगिक शब्दों की पहचान कैसे होती है ?

(क) दो शब्द एक दूसरे पर निर्भर होते हैं।

(ख) यौगिक और रूढ़ दोनों होते हैं

(ग) दो शब्दों के जोड़ से बने ऐसे शब्द, जो सार्थक होते हैं

(घ) दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बनते हैं

उत्तर : (ग) दो शब्दों के जोड़ से बने ऐसे शब्द, जो सार्थक होते हैं

प्रश्न 10 - योगरूढ़ शब्दों की विशेषता -

(क) दो शब्द जो एक दूसरे पर निर्भर हो

(ख) दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने शब्द जिनका विशेष अर्थ निकलें

(ग) दो शब्दों के जोड़ से बने ऐसे शब्द, जो सार्थक होते हैं

(घ) दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बनते हैं

उत्तर : (ख) दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने शब्द जिनका विशेष अर्थ निकलें